
कविकुलगुरु - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

M-550

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M550 विषय स्तोत्र.
नांव नरसिंहवडवानलस्तोत्र.
लेखक/लिपीकार — MSS
पृष्ठ 3.
काळ — पूर्ण/अपूर्ण.

Checked 2012

M-551

नृसिंह षडनाम

नृ॥

श्रीमहागणपतयेनमः॥श्रीगुरुभ्योनमः॥ ॥ॐ अस्यश्रीविमप्रलयकालनृसिंहव
डवानलमंत्रस्य॥प्रल्हादऋषिः॥गायत्रिछंदः॥विमप्रलयकालनृसिंहोदेवता॥
स्तंभोद्भवमितिबिजं॥सृष्टिसंरक्षणार्थमितिशक्तिः॥हिरण्यकश्यपसंहारणा
र्थेमितिकीलकं॥श्रीनृसिंहप्रेरणयाश्रीनृसिंहप्रीत्यर्थेजपेविनियोगः॥अथन्या
सः॥ॐ उग्रंवीरंजगुष्टाभ्यांनमः॥ॐ महाविष्णुंतर्जे॰ ॐ ज्वलंतंमध्यमा॰॥ॐ वि
श्वतोमुखंअनामिका॰॥ॐ नृसिंहंकनिष्टिका॰॥ॐ भिषणंभद्रंकरतलकर॰॥
ॐ मृत्युमृत्युनमाम्यहं भूर्भुवस्वरोमितिदिग्बंधः॥एवंषडंगन्यासंहृदयादिंकृत्वा॥
अथध्यानं॥श्रीमंनृसिंहविभवेगरुडध्वजाय॥तापत्रयोपशमनायभवौषधा
य॥कृष्णायवृश्चिकजलाग्निभुजंगरोगंक्लेशघ्ययायहरयेगुरुवेनमस्ते॥ॐ नमो

वी॥

भगवते नृसिंहरुद्राय अंकललित पिंगललोचनाय वज्रनखाय वज्रदंष्ट्राकराला
य जह्नीयं गार्ह्यपसं दक्षिणाग्निनेत्र वक्राय राक्षससंहारकालाय प्रल्हादन
क्षकरंतभो न्द्वायदेवतारक्षकाय दुष्टमर्दनाय हनकपधोन वज्रनख सिंहाय ज्वा
लमंत्र ज्वालयंत्र ज्वालतंत्र रक्षाणाय ह्रां ह्रीं हूं ह्रैं ह्रौं ललल श्रीवीरनृसिंहाय
पनमंत्रपन तंत्रपनयंत्र छेदनाय च्वेहं फट्॥ व्याघ्र सिंह्यशरभ भल्लुक दुष्ट मृग
छेदनाय।टंटंटंटं श्रीवीरप्रलयकालनर सिंहाय राजभयचोरभयनिवारणा
य॥ब्लां ब्लीं ब्लुं ब्लें ब्लौं वज्रदंष्ट्राय भयसर्वभयोच्चाटनाय सर्वशत्रुन् छेदि सर्वश
त्रुन् छेदि सर्व शत्रु जिव्हां किलय॥बुद्धि विनाशाय दुष्टानां वाचामुखं स्तंभय छं
छं छं छं ज्वालतंत्र रक्षपन वैरि जिव्हामुद्रनं किलय॥जयरलवमरयं॥स

१

वमररमलयं॥हवमररमलयं॥क्लां क्लीं क्लुं क्लें क्लौं वीरनृसिंहाय इंद्रदिशं बध्न॥ज्वा
लावक्रायया०॥करालदंष्ट्रायने०॥पिंगलाक्षायकु०॥मधुकेशायई०॥उर्ध्वभा
कउ०॥कस्यपसंहारायआ०॥आघोररूपाय पाता०॥उग्रदेह हृदयकमलोद्भ
वाय सर्वदिशबंधः॥हन ललल लि लि लि लि लु लु लु लु ले ले ले ले लो लो लो लो कु
लि लि लि कुलु लु लु कोलो लो लो कोको को शा किनिडाकिनि वेताल ब्रह्मराक्षस स
पैर्यश्च रद्रतस्कारोपद्रवादि उच्चाटनाय शेषवासुकि तक्षक शंखधु टिक ज्वा
नं तो च्चाटनाय घघघघ घ्रि घि घि घि घु घु घु घु घे घे घे घो घो घो घो घौ घौ घौ घौ शा
किनि ग्रह छेदि छेदि बालग्रहं छेदि प्रेतग्रहं छेदि पिशाचग्रहं छेदि पन्नगंछि ग्र
हं छेदि कृष्णा वीर छेदि रक्त वीरं छेदि स्मशानवीरं छेदी कृष्णादुर्गा छेदि का

मि नि ग्रहं छेदि मोहिनि ग्रहं छेदि क्रुन ग्रहं छेदी क्रोंध ग्रहं छेदि मुक ग्रहं छेदि
सर्व ग्रह छेदि ब्रम्ह ग्रहं छेदि इंद्र पर्यो दिशं ग्रह छेदी ०॥ सर्व दुष्ट काल प्रेत पिशा
च ग्रहं छिंदि ॥ करालु दंष्ट्रा दुष्ट देवताः छिंदि निटिलक्षाय वीन ग्रहा य्य छेदि का
ल भैरव ष्टादि कें काल भैरवं छेदि प्रलय कालं छेदी महाकालं छेदि जटिं गं छेदि
ज रिवणीं ग्रहं छेदि श्म सृलोन्चनां य रुद्र ग्रहं छेदि महाबाहवे ईंद्रादि सर्व ग्रह छे
दि ॥ करालवदन सर्व राक्षसं छेदि किंनाम कीं पुरुषं गरुड गंधर्वादि सिद्ध विद्याध
र सर्व गंधर्व छेदि वज्रन खाय वज्रायुधादि सर्वायुधं छेदि ॥ शाम गपाणादि
म बाणादि सर्व बाणं छेदि गदा धरादि क्रीमि किट पतंग मृग सर्वोपद्रव सुदर्श
नं छेदि ॥ अत्मन क्षां कुरु ॥ परसहस्र बाहवे ॥ हिरंण्य मर्दनाय बाल्क न क्षणा

२

नृ॥

य देवता प्रति पाल काय ० इश्वन सखाय स्तंभोद्भवाय आहोबळाय लक्ष्मि ना
रसिंहाय योगानंद पवन करा जिताय भगवते क्षेत्र वटं भोगानंदाय सर्व ज
न वंदिता ब्रह्म रुद्राद्रि पूजित ऋग्यजुः सामाथर्वादि वेद गति प्रति पाल काय
भृषि जन वंदित बुधि ल ल ल ल वा वीन नरसिंहाय कुरु क्षेम रक्षम रक्ष फट्
स्वाहा ॥ ७॥ इति श्रीनृसिंह वडवानल स्तोत्र संपुर्णं श्रीनृसिंहार्पणमस्तु ॥ ७॥

वा॥

नरसिह्ववउवानळपत्रे

७

[OrderDescription]
,CREATED=04.09.19 16:53
,TRANSFERRED=2019/09/04 at 17:18:18
,PAGES=5
,TYPE=STD
,NAME=S0001633
,Book Name=M-550-NARSINGH VADVANAL STROT
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,